फिसर इन एनो क्या है -

" फिसर इन एनो " बीमारी लगभग 60 से 70 प्रतिशत लोगो में पाई जाती है , यह एक बहुत ही कॉमन बीमारी है , इसमें एक बार सूखा मल आने के कारण मलद्वार के मुंह पर एक लम्बा सा चीरा लग जाता है तथा जब मरीज शौच हेतु जाता है तो मल का पहला हिस्सा सूखा आता है व मरीज को मल निकलते समय जलन और दर्द होता है व कभी - कभी खून भी निकल सकता है | यह दर्द व जलन कुछ मिनट अथवा कुछ घंटो तक होती है , यह क़िसी भी उम्र में हो सकती है , पर सामान्यतया 20 से 40 वर्ष कि उम्र में यह बीमारी अधिक पाई जाती है | पुरुष व महिला में इनका प्रतिशत बराबर का होता है

ऐनल फिसर होने का कारण क्या है ?

ऐनल फिसर होने का मुख्य कारण एक बार सूखे मल का आना होता है ,पर यह उन व्यक्तियों में ज्यादा मिलती है जिन्हें कब्ज कि हमेशा शिकायत बनी रहती है तथा जो शौच के वक्त ज्यादा जोर लगते है

जो लोग अपने भोजन में ज्यादा रेशे (fibre), कच्ची सब्जियां तथा फलो का प्रयोग करते है उन्हें इस बीमारी के कम होने कि संभावना होती है

इस बीमारी का ईलाज क्या है -

यदी मरीज बीमारी होने के महीने भर के भीतर आ जाये तो इस बीमारी को दवा तथा खान-पीन से ठीक किया जा सकता है ,परन्तु यदी देर हो जाये तो उसका ईलाज सिर्फ ऑपरेशन द्वारा ही संभव होता है ,अब मरीज को नई तकनीक LSCIS जिसको करने में सिर्फ 10 मिनट का समय लगता है द्वारा करते है तो मरीज को उसी दिन छुट्टी दी जा सकती है जिसमे कोई ड्रेसिंग करने कि आवश्यकता नहीं होती तथा मरीज 24 से 48 घंटे बाद काम पर जा सकता हैं |

पुरानी तकनीक से मल पर 20% तक कंट्रोल कम होने कि संभावना होती है जब कि नई तकनीक से यह संभावना घाट कर 0.5% से भी कम हो जाती है

क्या ऑपेरशन के बाद फिसर पुन: हो जाता है ?

साधारणतया मरीज को ओपेरेशन के बाद दुबारा होने कि सभावना काफी कम होती है यदी वो खान-पीन का ध्यान रखे तथा कब्ज न होने दे |

आवश्यक है कि मरीज किसी नीम-हकीम के चंगुल में न फंसे तथा एक ट्रेंड व क्वालीफाईड कोलोरेक्टल सर्जन कि सलाह ले